इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हरावण्ड

जगदलपुर, बस्तर – 494 005

अंक : 04

जनवरी से मार्च 2009

माननीय कुलपति डॉ. एम.पी.पांडे का भ्रमण

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के नवनियुक्त माननीय कुलपति डॉ. एम.पी.पांडे ने दिनॉक 23/03/09 को कृषि विज्ञान केंद्र, जगदलपुर, बस्तर का निरीक्षण किया । प्रक्षेत्र पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन मक्का (30V92), मछली सह बतख पालन, ग्रीन हाऊस, मशरूम उत्पादन इकाई एवं प्रदर्शनी कक्ष आदि का अवलोकन किया एवं डॉ. एस.सी.मुखर्जी कार्यक्रम समन्वयक ने केन्द्र द्वारा संचालित विस्तार गतिविधियों की जानकारी दी । माननीय कुलपति ने कटक में अनुसंधान केंद्रो का भ्रमण करने के लिए कहा । जहां धान के साथ मछली पालन एवं बतख पालन बहुत अच्छा हो रहा है । भ्रमण के दौरान संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. ए.एस.आर.ए.एस. शास्त्री, अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाटिल एवं केंद्र के वैज्ञानिक सुश्री रत्ना नशीने, डॉ. बी.एस.किरार, डॉ. बी. एस. असाठी एवं आर.एस. राजपूत आदि साथ में थे।

कुलपति द्वारा मक्का प्रदर्शन का अवलोकन

बी.एस. किरार को माननीय मुख्यमंत्री द्वारा प्रशस्ति पत्र

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट बस्तर द्वारा गणतंत्र दिवस 2009 के अवसर पर मान. मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, छ.ग. शासन के हाथो डॉ. बी.एस.किरार, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, जगदलपुर को कृषि तकनीकी फैलाव के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिये प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया ।

डॉ. बी.एस. किरार वर्ष 2001 से बस्तर में केंद्र की विस्तार गतिविधियों – प्रशिक्षण, प्रदर्शन, प्रक्षेत्र भ्रमण एवं अन्य कार्यो को कियान्वित करने में पूर्ण निष्ठा एवं लगन से कार्य कर रहे हैं । धान, गेहूँ, मक्का, तोरिया, चना आदि की उन्नत किस्मों एवं अन्य शासन की कृषक कल्याणकारी योजनाओं (शाकम्भरी, किसान समृद्धि, किसान क्रेडिट कार्ड एवं पशुपालन विभाग की की जानकारी कृषकों को दी गयी है ।

महिला कृषक रैवारी ने खेती से आय को बढ़ाया

आदिवासी महिला श्रीमती रैवारी कश्यप, पति जयराम, ग्राम–कोण्डालूर, जो आज खेती में वैज्ञानिकों से मार्गदर्शन लेकर आय में वृद्धि की है । वर्ष 2005 से पहले परंपरागत तरीके से खेती एवं मजदूरी कार्य कर 8000 से 10000 रूपये वार्षिक कमाती थी। वर्ष 2005 में कृषि विज्ञान केंद्र, जगदलपुर द्वारा गांव कोण्डालूर विकास खण्ड तोकापाल को अंगीकृत किया । इस महिला ने केंद्र से तकनीकी मार्गदर्शन एवं आर्थिक सहायता का फायदा उठाते हुये आज उन्नत तकनीक से खेती कर रही है । पहले सब्जी व फसलों की सिंचाई तालाब के पास कुआं खोदकर टेडा से करती थी कृषि विज्ञान केंद्र, ने वर्ष 2007 में लो लिफ्ट पंप दिया । वर्ष 2008 में स्वयं से 1 एच.पी. का विधुत पंप सिंचाई हेतु खरीदा । केंद्र ने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गांरटी योजना के तहत अन उपजाउ भूमि पर एक एकड़ का तालाब निर्माण करवाया । जिससें धान व सब्जी उत्पादन में बढोत्तरी एवं मछली पालन भी शुरू किया है । दूरदर्शन एवं आकाशवाणी दल रैवारी के खेतों में जाकर इसके अनुभवों की रिकार्डिंग बस्तर अंचल में प्रसारित करते हैं । यह महिला गांव की अन्य महिलाओं को उन्नत खेती की प्रति जागरूक एवं प्रेरित कर रही है । अभी वर्तमान में रैवारी कृषि विज्ञान केंद्र, की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की सदस्य भी है । जो महिला वर्ष 2005 से पहले कृषि एवं मजदूरी से 8000–10000 रू. वार्षिक कमाती थी वो वर्तमान में 30000 से 35000 रूपये कमा कर सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति की ओर अग्रसर है।

संरक्षक : डॉ. एम.पी. पांडे, कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक : डॉ.आर.बी.एस.सेंगर, निदेशक विस्तार सेवायें, इं.गां.कृ.वि.वि.

प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. यू.एस.गौतम, आंचलिक समन्वयक, जोन–7, जबलपुर
डॉ. एस.के. पाटिल, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, जगदलपुर

प्रकाशक : डॉ. एस.सी. मुखर्जी, कार्यक्रम समन्वयक, के.वी.के. बस्तर

संपादक : डॉ. बी.एस. किरार, एस.एम.एस. (कृषि विस्तार)

सहयोगी : सुश्री रत्ना नशीने, एस.एम.एस. (गृह विज्ञान)
डॉ. बी.एस. असाटी, एस.एम.एस. (उद्यानिकी)
श्री आर. एस. राजपूत, प्रक्षेत्र प्रबंधक (मृदा विज्ञान)